रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355 / 79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67 / 2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127 / 204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –9 ● कानपुर 1 से 15 मई 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

पूरे प्रदेश में धूमधाम से मनाया गया स्थापना दिवस

"इलेक्ट्रो होम्योपैथी लगातार मज़बूती की तरफ़ बढ़ते हुए मान्यता को प्राप्त करे इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम निरन्तर प्रयासशील हैं और सफ़लता हमें मिलेगी इसके लिए हम आश्वस्त भी हैं।"

यह विचार बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी ने बोर्ड के प्रशा0 कार्यालय, जूही, कानपुर में बोर्ड के 43 वें स्थापना दिवस के अवसर पर व्यक्त किये, डा0 इदरीसी ने कहा धीरे–धीरे आज हम 43 वें वर्ष में प्रवेश कर गये हैं जितने वर्ष बीतते जा रहे हैं हम समझते हैं कि हमारा उत्तरदायित्व भी बढ़ता जा रहा है। हम चाहते हैं कि केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें शीघ्र से शीघ्र इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नियमितीकरण करे जिससे कि इस विधा के चिकित्सकों को भी वह सम्मान मिल सके जो अन्य मान्यता प्राप्त पद्धतियों के चिकित्सकों को प्राप्त है।

डा0 इदरीसी ने आगे कहा कि मान्यता की राह में वर्तमान प्रचलित पाठ्यक्रम प्रभावित करता रहा है, हमने इस विषय पर गम्भीरता से विचार किया विचारोपरान्त यह निर्णीत हुआ कि एक नया पाठ्यक्रम बनाया जाये जो कि मान्यता में सहायक हो साथ–साथ चिकित्सा शिक्षा विभाग के निर्देशों के अनुरूप हो। कई महीनों के कठिन परिश्रम के बाद आज हम इन दो कोर्सों को जनता को समर्पित कर रहे हैं यह दोनों कोर्स जी0 ई0 एच0 एस0 व पी0 जी0 ई0 एच0 अन्य पद्धतियों में प्रचलित कोर्सों के समकक्ष हैं, निकट भविष्य में यही कोर्स मान्यता के सहायक होंगे।

डा0 इदरीसी ने कहा हम अपने उन साथियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं जिनका सहयोग और समर्थन हमें समय समय पर मिलता रहा है, हम अपेक्षा करते हैं कि पूर्व की भांति हमें सबका सहयोग व स्नेह प्राप्त होता रहेगा।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बोर्ड के रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद ने कहा कि इन 43 वर्षों में हमने बहुत उतार चढ़ाव देखे हैं मै तो प्रारम्भ से ही बोर्ड से जुड़ा हूँ इसलिए बोर्ड की हर गतिविधि का मैं साक्षी हूँ, आज हमें गर्व है कि डा0 इदरीसी के नेतृत्व व डा0 शाहीना इदरीसी की दूरदृष्टि के कारण आज बोर्ड भारत वर्ष का एक मात्र शासकीय आदेश प्राप्त संगठन है, हम अपेक्षा करते हैं कि यह दम्पति इसी सूझबूझ के साथ बोर्ड के प्रगति का एक नया कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

कार्यक्रम को दिशा देते हुए बोर्ड की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती शाहीना इदरीसी ने अपने बोर्ड के साथियों पर भरोसा जताते हुए कहा कि डा0 अतीक अहमद व डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा ने जिस श्रम से बोर्ड को ऊचाईयाँ दी हैं यह क्रम आगे भी जारी रहेगा।

कार्यक्रम को विचार देते हुए डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि समय के साथ कैसे कार्य किया जाता है यह मैने डा0 इदरीसी से सीखा है और कामना करता हूँ कि डा0 इदरीसी के नेतृत्व में कार्य करते हुए बोर्ड के साथ साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी भी सम्मान को प्राप्त करे हम अपने दो साथी श्री वसीम इदरीसी व मो0 नसीम इदरीसी के योगदान को नहीं भूल सकते हैं वह भी सम्मान के पात्र हैं।

कार्यक्रम का संचालन डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी ने किया।

स्थापना दिवस के अवसर पर बोर्ड के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी नये कोर्स G.E.H.S. के प्रास्पेक्टस का लोकार्पण करते हुये साथ में हैं डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई महासचिव इहमाई एवं O.S.D. डा0 शाहीना इदरीसी – छाया गज़ट

बोर्ड के 43 वें स्थापना दिवस के अवसर पर जनपद मऊ में डा0 अयाज़ अहमद द्वारा नये कोर्स G.E.H.S. के प्रास्पेक्टस का लोकार्पण करते हुये –छाया गज़ट

बोर्ड के 43 वें स्थापना दिवस के अवसर पर C.P.E.H. मेडिकल इन्सटीट्यूट आजमगढ़ में डा0 मुशताक अहमद द्वारा नये कोर्स G.E.H.S. के प्रास्पेक्टस का लोकार्पण करते हुये–छाया गज़ट

हम सभी निर्णयों में बोर्ड के साथ हैं

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की प्रबन्ध समिति द्वारा जो भी निर्णय लिये जायेंगे हम सब उन निर्णयों का स्वागत करेंगे और पालन भी करेंगे यह सामुहिक विचार बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा 18 अप्रैल, 2017 को बोर्ड के मुख्यालय लखनऊ में भारत सरकार द्वारा जारी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिए 28 फरवरी, 2017 को नोटिस से उत्पन्न स्थिति पर विचार करने हेतु बोर्ड से सम्बद्ध सभी संस्थानों / अध्ययन केन्द्रों के प्रबन्धकों / प्राचार्यों व संचालकों की बैठक में आये।

कार्यक्रम को प्रारम्भ करते हुए बोर्ड के प्रवक्ता डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी ने उपस्थित सभी को आज की बैठक के विषय में विस्तार से बताते हुए कहा कि आज आवश्यकता है कि हम सभी विवेक से कार्य करते हुए नये परिवेश में जाने को तैयार रहें।

सरकार लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता पर कार्य कर रही है इसी लिए 28 फरवरी, 2017 को नोटिस जारी कर कुछ जानकारियाँ चाहीं हैं पूरे देश में इस विषय को लेकर तरह तरह की भ्रांतियाँ हैं हमें इन सबसे ऊपर उठकर निष्पक्ष भाव से कार्य करना

शेष पेज 4 पर

सार्थक सोच

व्यक्ति की जैसी सोच होती है परिणाम भी वैसे ही होते हैं, यह वाक्य आदिकाल से लेकर आज तक सत्य सिद्ध हो रहा है क्योंकि सोच की हिसाब से व्यक्ति अपने कार्य एवं दिशा तय करता है और उसी के अनुरूप फल पाने की इच्छा रखता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कई तरह की सोच वाले व्यक्ति व संगठन हों, यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि किसी भी आन्दोलन में जुड़े हुए सारे लोगों की सोच एक सी हो यह सम्भव नहीं है, इसका कारण यह है कि हर व्यक्ति का अपना वैचारिक दर्शन होता है और इसी दर्शन के आधार पर उसका दृष्टिकोण बनता है यह एक अलग बात है कि कार्य करने के ढंग प्रथक प्रथक हो सकते हैं परन्तु जब उद्देश्य एक हो तो कहीं न कहीं वैचारिक सामंजस्य बैठालना पड़ता है क्योंकि बिना सामंजस्य के सफलता की कल्पना भी व्यर्थ होती है।

इसे हम संयोग ही कहेंगे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जितने भी व्यक्ति समूह या संगठन लगे हैं सभी का उद्देश्य एक है और सब यही चाहते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो और इसी सम्मानजनक स्थान की प्राप्ति के लिए अपनी गतिविधियां संचालित करते रहते हैं परन्तु इन गतिविधियों से जो परिणाम आने चाहिये वह नहीं प्राप्त हो पा रहे हैं इससे इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों के मध्य निराशा का भाव धीरे–धीरे जन्म लेने लगता है। निराशा के भाव का जन्म लेना स्वाभाविक भी है क्योंकि जब भी किसी संगठन द्वारा कोई आन्दोलन खड़ा किया जाता है तब उस आन्दोलन की सफलता के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को भावनात्मक रूप से जोड़ने का प्रयास किया जाता है और प्रयास को सफल करने के लिए कुछ वादे भी किये जाते हैं परन्तु समय पर समय बीतता जाता है परन्तु वादे किसी भी अंश तक सही सिद्ध नहीं होते हैं जिससे चिकित्सकों का विश्वास टूटता है, आन्दोलनकारी का विश्वास टूटना किसी भी आन्दोलन के लिए दुखद पहलू से कम नहीं होता है।

समय पर समय बीतता जा रहा है परन्तु परिणाम कहीं दूर दूर तक नज़र नहीं आ रहे हैं ! नज़र भी आये कैसे ? चूंकि प्रयास जिस तरह से होना चाहिये वह नहीं हो पा रहे हैं हमारे अधिकांश साथी सफलता पाने के लिए जिस तरह के प्रयास कर रहे हैं वह यर्थाथ से कोसों दूर हैं जबकि होना यह चाहिये कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की आज की दशा को देखते हुए आन्दोलन की दिशा निश्चित करनी चाहिये।

यह सर्वविदित है कि कार्य को ज़्यादा दिनों तक दबाया नही जा सकता और वह कार्य जो जनोपयोगी है उसकी भी उपेक्षा बहुत समय तक सम्भव नहीं है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बहुत कार्य हुआ है परन्तु उस कार्य को कभी भी प्रचारित नहीं किया गया और जिन भी संस्थाओं या संगठनों ने अपने प्रचार में कार्य को हिस्सेदारी दी है उसका अंश बहुत न्यून है। आज जब पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने की अधिकारिता है तब हमें अपने कार्यों का प्रचार करना ही होगा पिछले दिनों एक पोस्ट पढ़ने को मिला कि कुछ हमारे आन्दोलनकारी गुजरात राज्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित कराने के लिए न्यायालयों की परिक्रमा कर रहे थे परन्तु अब उन्हें परिक्रमा नहीं करनी पड़ेगी क्योंकि पंजाब के एक इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक ने अपने किये हुए कार्यों की पूरी फाइल सौंप दी है। इसमें कितनी सच्चाई है यह तो पोस्ट करने वाले ही जाने हम तो इस बात की अनुसंशा करते हैं कि ऐसे कार्यों को बढ़ावा देना चाहिये तभी हमारे दावे की पुष्टि होगी ।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक चमत्कारी चिकित्सा पद्धति है व इससे गम्भीर से गम्भीर रोगों पर नियन्त्रण किया जा सकता है, इन दावों की स्वीकारोक्ति समाज में तभी होगी जब हम अपने किये हुए कार्यों को प्रदर्शित करेंगे इससे उन लोगों को भी बल प्राप्त होगा जो सुदूर गावों में बैठकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा व्यवसाय करते हैं तथा रोगी को लाभ भी प्रदान करते हैं परन्तु अपनी सफलता प्रदर्शित नहीं कर पाते हैं इसलिए इस परम्परा को हमें आगे बढ़ाना है।

यदि आज एक चिकित्सक आगे बढ़कर हिम्मत दिखाते हुए अपने कार्यों को सार्वजनिक करता है तो निश्चित रूप से ऐसा कार्य करने में हमारे अन्य साथी भी हिचकिचाहट नहीं दिखायेंगे और जिस सफलता के लिए हम परेशान हैं वह प्राप्त होगी।

गर्मी में गर्मी लाने की तैयारी

भारत वर्ष एक ऐसा देश है जहां के निवासियों को हर तरह के मौसम का आनन्द प्राप्त होता है, मार्च का महीना बीतते बीतते काफी गर्म वातावरण होता है क्योंकि बसन्त के साथ ही शीत ऋतु का समापन होने लगता है और मार्च और अप्रैल का महीना पूरे देश में परीक्षाओं का वातावरण लाता है बोर्ड स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की परीक्षाओं का आयोजन इसी काल में होता है हर तरफ गर्मी रहती है, किसी को परीक्षा की तैयारी की गर्मी, किसी को कम्पिटीशन फाइट करने की गर्मी और इस गर्मी वाले वातावरण में सब कुछ सहजतापूर्वक चलता ही रहता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सम्बन्ध गर्मी से है जब जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कुछ नया हुआ है तब–तब मौसम गर्म ही रहा है।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की स्थापना 24 अप्रैल अर्थात गर्म मौसम में हुई भारत सरकार ने भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में स्पष्टीकरण 5 मई को जारी किया। भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा चिकित्सा व अनुसंधान करते रहने का आदेश 21 जून को निर्गत किया था इस तरह जो कुछ भी अच्छा होता है उसमें गर्मी का बड़ा महत्व है। यदि हम आन्दोलनों की बात करें तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अधिकांश आन्दोलन गर्म के मौसम में प्रारम्भ हुए हैं और वातावरण में गर्मी लायें हैं। सम्मेलन और धरनों का आयोजन भी अधिकतर इसी मौसम में होता है, इस परम्परा को शायद हमारे साथी तोड़ना नहीं चाहते हैं और उनका यह प्रयास कि चिकित्सकों के मध्य नई ऊर्जा भरकर गर्मी का संचार किया जाये जिससे कि आन्दोलन को धार दी जा सके। धीरे–धीरे मौसम बदल रहा है और इस बदलते हुए मौसम में लोगों को जोड़ने का प्रयास अपने–अपने ढंग से फिर किया जा रहा है, दो कार्यक्रमों के आयोजित होने की सूचनायें आ रही हैं। एक आयोजन सम्मेलन की शक्ल में बिहार राज्य के बेगुसरायं में आयोजित होना है इस कार्यक्रम को भी राष्ट्रीय स्तर का बताया जा रहा है उसी समय एक राष्ट्रीय धरने का आयोजन देश की राजधानी दिल्ली के जंतर मंतर में आयोजित किया जा रहा है, यह कार्यक्रम भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित बिल को लेकर हो रहा है।

बिहार में जो कार्यक्रम है उसकी भी पृष्ठभूमि मान्यता का बिल है दोनों कार्यक्रम ठीक हैं कार्यक्रमों से ही लोगों में चेतना का भाव जागृत होता है लेकिन जो हमारे कार्यक्रम के आयोजक हैं उनको कम से कम एक बार बैठकर तिथियों की निश्चितता पर चर्चा ज़रूर कर लेनी चाहिये थी। कारण यह है कि इन कार्यक्रमों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का चिकित्सक ही जाता है एक ही समय पर या 4–6 दिन के अन्तराल में एक ही तरह के दो कार्यक्रम आयोजित होने से चिकित्सकों के मन में अनिर्णय की स्थिति पैदा होती है कि किस कार्यक्रम में जायें और किस कार्यक्रम में न जायें बिहार का कार्यक्रम भी एक नई ऊर्जा प्रदान कर सकता था यदि विषय पर गम्भीरता से चिन्तन किया गया होता।

वैसे तो आजकल इलेक्ट्रो होम्योपैथी सम्मेलनों का एक ढर्रा सा हो गया है जो लोग आयोजकों के सम्पर्क में होते हैं उन्ही का नन्दन, अभिनन्दन और वन्दन होता है जिससे जो नये चिकित्सक पूरे मनोयोग से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सेवा में लगे होते हैं वह प्रकाश में नहीं आ पाते हैं। हर एक के मन में यह इच्छा होती है कि वह भी सम्मान प्राप्त करे व अपनी बात सबके सामने रखे इससे उत्साह में वृद्धि होती है साथ–साथ आन्दोलन को गति भी मिलती है, पिछले वर्षों में जंतर मंतर में कई धरने आयोजित किये गये चिकित्सक भी जुटे पर यदि कुछ प्रतिशत भी परिणाम आया होता तो चिकित्सकों के मध्य अत्याधिक ऊर्जा का संचार होता, दूसरी बात यह भी है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के बिल को लेकर सरकार पर दबाव बनाने के लिए जो यह आन्दोलन किये जा रहे हैं उनपर गम्भीरता से चिन्तन करने की आवश्यकता है।

यह विडम्बना है कि आज तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित बिल की आवश्यकता और बाध्यता के बारे में हमारे साथी समझने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, बिल लाना, बिल प्रस्तुत करवाना, दोनों ही अच्छी बात है परन्तु बिलों के बारे में उनकी वास्तविकता हमें समझनी होगी प्राइवेट मेम्बर बिल का सरकार कितना उपयोग करती है और उसपर सरकार का रवैया क्या रहता है इसपर हमें शान्त मन से चिन्तन करना चाहिये। इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बिलों का इतिहास बहुत पूराना है हमारे पूर्ववर्ती साथियों के मन में भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का विचार कौंदता था और उनकी भी इच्छा होती थी कि सरकार अड़ियल रवैया छोड़कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कोई ऐसा रास्ता निकाले जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति की मान्यता का मार्ग प्रशस्त हो सके। जहां तक बिल का सम्बन्ध है हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि सरकार द्वारा वर्ष 2005 में न्यु मेडिकल सिस्टम रिकगनीज़न बिल लाया गया था जो कि आज भी उसी स्थिति में पड़ा हुआ है।

यदि बिल की ही बात करनी है तो जिन माननीय सांसदों की मदद से बिल लाने का प्रयास कर रहे हैं वह अपने उन्हीं सांसदों से यह प्रार्थना करें कि आदरणीय सांसद जी आप अपने स्तर से यह प्रयास करें कि जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित बिल है उसमें संशोधन कराकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दिशा में परिवर्तन लावें, यह काम हमारे माननीय सांसद लोग कर सकते हैं।

नई बिल पर चर्चा की तुलना में यह मार्ग ज़्यादा सुगम व आसान है नये बिल पर चर्चा हो, सकारात्मक चर्चा हो, फिर हमें सांसदों का समर्थन मिले, सरकार सांसदों की बातों से सहमत हो, चर्चा में हमारे सांसद यह सिद्ध कर पायें कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी जनता को स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण लाभ देती है, फिर लोकसभा से राज्य सभा में चर्चा में जाये, वहां भी समर्थन प्राप्त हो, पुनः अन्य कार्यवाहियों के बाद ही मान्यता की राह निकल सकती है। हर प्रयास के दो पहलू होते हैं यह आवश्यक नहीं होता है कि हर प्रयास के सार्थक परिणाम ही निकलें इसलिए किसी भी क्षेत्र पर कार्य करने से पहले हमें उसके नकारात्मक पहलू पर ज़्यादा चिन्तन करना होता है यदि कुछ परिणाम नकारात्मक आवें तो उनकी भरपायी हम कैसे करेंगे? नकारात्मकता के भय से हम कार्य न करें, प्रयास न करें, यह भी उचित नहीं होता है परन्तु कार्य करने के पहले यह विचार कर लेना चाहिये कि इसके परिणाम सकारात्मक कितने होंगे! यदि भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत बिल 2005 में सरकार आंशिक संशोधन करती है और उस बिल को न्यु मेडिकल सिस्टम बिल के स्थान पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बिल के रूप में प्रस्तुत करे तो सफलता का प्रतिशत स्वतः बढ़ जाता है।

हमारे साथियों में राजनैतिक इच्छा शक्ति की कमी नही है और राजनैतिक पकड़ भी है परन्तु उसका सही

शेष पेज 4 पर

मूल विषय से भटकती मान्यता की मीटिंगें

''28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार के स्वास्थ्य मन्त्रालय द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मैकेनिज़्म के लिए जो नोटिस जारी किया गया है इस नोटिस ने पूरे इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में एक अजीब सी हलचल पैदा कर दी है और यह हलचल इस कदर है कि लोगों में बेचैनी स्पष्ट दिखायी पड़ रही है''

जब इस विषय पर विचार किया गया तो एक बात स्पष्ट नज़र आयी कि यह बेचैनी स्वाभाविक है ! क्योंकि वर्ष 2010 के बाद इलेक्ट्रो होम्योपैथी में एक विभाजक रेखा खिंच गयी है, रेखा के एक तरफ़ वह संगठन, वह संचालक हैं जिन्हें भारत सरकार और राज्य सरकार से कार्य करने की अनुमति प्राप्त है, इसके लिए बाकायदा शासकीय आदेश भी पारित किये गये हैं कुछ परिस्थितियां ऐसी बनी हैं और कानून की स्थिति भी ऐसी है कि बिना आदेश के जो संस्थायें कार्य कर रही हैं वह अपने आप को कार्य करने में असहज महसूस कर रही हैं इसलिए ऐसी संस्थायें जो अभी तक अधिकार पाने में सफ़ल नहीं हो पायीं या दूसरे शब्दों में कहें कि अधिकार पाने के उनके सारे प्रयास सफ़ल नहीं हो पाये, ऐसे लोग इस नोटिस को एक वरदान मानते हैं क्योंकि इस नोटिस में सरकार ने आश्वस्त किया है कि यदि सरकार संतुष्ट हो गयी तो वह एक अधिशासी आदेश जारी करेगी, पिछले 6 वर्षों में पूरे देश से बहुत सारे ऐसे संगठन सामने आये जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का आन्दोलन चला रहे थे, कुछ संगठनों ने तो यहाँ तक वादा कर लिया था कि एक निश्चित तिथि के अन्दर वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता दिलाकर ही रहेंगे।

तिथियां आयीं और चली गयीं पर परिणाम वही ढाक के तीन पात, धीरे–धीरे आन्दोलन भी दम तोड़ने लगा, जो चिकित्सकगण इस आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रहे थे उनके अन्दर भी निराशा व्याप्त हो गयी और अविश्वास ने जन्म ले लिया परन्तु 28 फरवरी, 2017 की नोटिस ने इन आन्दोलन– कारियों की साख को बचाने का एक अवसर दिया परन्तु पूरे देश में इस नोटिस को लेकर जिस तरह की भ्रान्तियां व्याप्त हैं वह कोई शुभ संकेत नहीं है हाँ ! इस नोटिस के आने के बाद कुछ संगठनों ने व्यवसाय के नये अवसर तलाश लिये हैं अक्सर सोशल मीडिया पर इस तरह के कमेंट पढ़ने को मिल जाते हैं।

बहुत सारे संगठन अपने चिकित्सकों को डरवाते हैं कि हमसे जल्दी मिलो अन्यथः आपका नाम मान्यता पाने वाले चिकित्सकों की सूची से हटा दिया जायेगा। एक संगठन ने तो बकायदा व्यवस्था बना दी है कि रिनिवल करा लो अन्यथः मान्यता की सुविधा से वंचित हो जाओगे जबकि नोटिस में इस तरह की किसी भी सूचना की व्यवस्था नहीं है।

दूसरी तरफ़ हमारे नेतागंण या तो इस नोटिस के भाव को समझ नहीं पाये या फिर जानबूझ कर न समझ होने का नाटक कर रहे हैं ! देखा जाये तो नोटिस की जानकारी अभी भी हमारे साथियों को नहीं है, जब वे नोटिस के बारे में ही नहीं जानते तो नोटिस के अन्दर क्या है, वे क्या जाने ? सरकार ने भी बड़ी चतुराई से काम लिया है जो नोटिस सरकार को सामान्य व्यवस्था के तहत सार्वजनिक करनी चाहिये वह सरकार ने अपनी अधिकारिक वेबसाइट पर सूचना के रूप में डाल दी है अब हमारे सीधे–सादे चिकित्सक जो अपनी साइट ढूँढ नहीं पाते हैं वह भला भारत सरकार की इस साइट को कैसे ढूँढ पायेंगे जिसमें एक लिंक में अनेक सबलिंक अटैच हैं, इन परिस्थितियों में हमारे चिकित्सक को वही जानकारी मिल पाती है जो हमारे नेतागण प्रसारित करते हैं इस नोटिस में जो कुछ भी लिखा है हर व्यक्ति उसे अपने हिसाब से व्याखित करता है तद्नुरुप उसे परिभाषित भी करता है इसका परिणाम यह होता है कि हर व्यक्ति के पास अलग–अलग स्तर की जानकारी पहुँचती है, इस नोटिस में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक से सम्बन्धित कोई वैज्ञानिकता की जानकारी नहीं चाही गयी है फिर भी मान्यता के लिये आयोजित होने वाली हर मीटिंग में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वैज्ञानिकता की चर्चा अवश्य होती है और जो हमारे वैज्ञानिक साथी हैं वे अपने–अपने स्तर से वैज्ञानिकता की परिभाषा भी बताते हैं, कष्ट तो तब होता है जब हमारे

शेष पेज 4 पर

दिल्ली में मान्यता संबंधी मीटिंग को सम्बोधित करने के लिये तैयार खड़े हुये इहमाई के महासचिव डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई। छाया — गजट

दिल्ली में मान्यता संबंधी मीटिंग को सम्बोधित करते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन के महासचिव डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई। छाया — गजट

हम सभी निर्णयों में बोर्ड के साथ हैं प्रथम पेज से आगे

है मान्यता में सहायक दो नये कोर्सों का लोकापर्ण भी होना है।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी ने बताया कि सरकार की बढ़ती हुई गतिविधियों को देखते हुए व पूर्व के अनुभवों से सीख लेते हुए यह निर्णय लिया गया कि प्रचलित कोर्स का उच्चीकरण किया जाये जो कि मान्यता में सहायक होने के साथ साथ प्रदेश की चिकित्सा शिक्षा विभाग के मानकों के अनुरूप हो इसलिए यह दो नये कोर्स जी0 ई0 एच0 एस0 व पी0 जी0 ई0 एच0 नये सत्र से प्रभाव में आ जायेंगे इन कोर्सों का लोकापर्ण प्रदेश स्तर पर हर जनपद पर 24 अप्रैल, 2017 को बोर्ड के स्थापना दिवस के अवसर पर किया जायेगा।

इस बैठक में डा0 आर0 के0 कपूर लखनऊ, डा0 एम0 ए0 इदरीसी प्रतापगढ़, डा0 अयाज अहमद मऊ, डा0 कुलदीप जालौन, डा0 अम्मार बिन साबिर शाहजहांपुर, डा0 इखलाक अहमद इटावा, डा0 इसरार अहमद फिरोज़ाबाद, डा0 पी0 के0 मौर्या जौनपुर, डा0 आर0 के0 शर्मा लखीमपुर, प्रिन्स श्रीवास्तव महाराजगंज, डा वेद प्रकाश श्रीवास्तव सिद्धार्थनगर, डा0 मुश्ताक अहमद आजमगढ़, डा0 पी0 एन0 कुशवाहा रायबरेली, डा0 प्रमोद गुप्ता हरदोई आदि लोग प्रमुखतः से उपस्थित रहे। डा0 आर0 के0 शर्मा लखीमपुर ने बैज लगाकर डा0 इदरीसी व डा0 बाजपेयी का सम्मान किया। डा0 पी0 के0 मौर्या जौनपुर ने गज़ट में छपी जानकारियों की भूरि भूरि प्रंशसा की।

डा0 अतीक अहमद व मिथलेश कुमार मिश्रा एवं नसीम इदरीसी की उपस्थिति सराहनीय थी।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 से सम्बद्ध मेडिकल इन्सटीट्यूट/स्टडी सेन्टर्स के प्रमुख व उनके प्रतिनिधि नये कोर्स पर चर्चा करते हुये। दायें ओर डा0 आर0 के शर्मा (व्यवस्थापक एम0एस0डी मेडिकल इन्सटीट्यूट, लखीमपुर) बोर्ड के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी का सम्मान करते हुये एनके बगल में खड़े इहमाई के महासचिव डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई। छाया — गजट

गर्मी में गर्मी दूसरे पेज से आगे

प्रयोग नहीं हो पा रहा है, इतिहास साक्षी है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की लड़ाई में बहुत सारे राजनीतिज्ञोंने अपना समर्थन व सहयोग दिया है जिसमें कुछ नाम राष्ट्रीय स्तर के हैं जैसे सत्यप्रकाश मालवीय डा0 सी0 पी0 ठाकुर, रामदास अठावले, देवव्रत विस्वास, विश्वनाथ प्रतापसिंह ये कुछ नाम हैं जिनका सिर्फ सहयोग और समर्थन ही मिल पाया परिणाम नहीं इसलिए इस आन्दोलन को राजनीतिक लाभ दिलाने के लिए हमें नये सिरे से सोचना होगा वर्तमान में सांसद रंजीता रंजन जी का सहयोग और समर्थन इलेक्ट्रो होम्योपैथी को प्राप्त हो रहा है परन्तु अब आवश्यकता है कि हम इस सहयोग और समर्थन को परिणाम में परिवर्तित करवायें कारण प्रयास करते करते 70 वर्ष हो गये और स्थिति तैसी की तैसी है इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन के सामने ही कुछ और आन्दोलन खड़े हुए उन्हें सफलता मिल गयी और हमारी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया और जो परिवर्तन है उसे हमारे साथी स्वीकार नहीं कर पा रहे है। यदि इस परिवर्तन को स्वीकारा होता और उसी क्षेत्र में कार्य किया होता तो निश्चित रूप से स्थिति आज बहुत भिन्न होती। लेकिन इतना सबकुछ होने के उपरान्त ही हम और हमारे साथी अभी भी अलग अलग घड़ों में बटे हुए है कोई किसी की बात सुनने वाला नहीं है। परिणामतः परिस्थितियों में जो परिवर्तन दिखायी देना चाहिये वह नहीं दिखायी पड़ता इस गर्मी में जो यह आयोजन किये जा रहे है हमारी कामना है कि आयोजन तो सफल हो साथ साथ इन आयोजनों के पीछे जो उद्देश्य है अर्थात इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता प्राप्त हो इस पावन उद्देश्य की पूर्ति की तरफ कुछ कदम तो बढ़े हमें यह पता है कि मान्यता कोई आसान काम नहीं है इसके लिए जिन प्रर्याप्त तर्कों और तथ्यों की आवश्यकता है उसकी कमी नहीं है बस हमें प्रस्तुतीकरण का सुअवसर तलाशना होगा अन्यथा कार्यक्रम ऐसे ही आयोजित होते रहेंगे लोग जुड़ते रहेंगे और आशा निराशा में बदलती रहेगी हमारे नेताओं का दायित्व है कि स्थिति को समझे और आशाओं को जन्म दें।

मूल विषय से भटकती पेज 3 से आगे

यह वैज्ञानिक साथी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सिद्धान्त पर ही प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देते हैं, प्रश्नचिन्ह तक ही सीमित रहें तो कोई बात नहीं इनकी बुद्धि बहुत तेज़ दौड़ती है और ये नये सिद्धान्त का प्रतिपादन भी कर देते हैं, यह इस बात को भूल जाते हैं कि जिस नये सिद्धान्त को तार्किक रुप से सही साबित करने की चेष्टा करते हैं जब सिद्धान्त ही नया होगा तो निसन्देह मैटी की प्राचीनता पर सन्देह पैदा होगा और यही वह कारण होगा जो सरकार को एक अवसर देगा कि वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विरुद्ध टिप्पणी कर सके और इन मान्यता की मिटिंगों में फार्मेसी एवं फिलॉसफी पर भी खुलकर चर्चा होती है, औषधियों के निर्माण पर शंका व्यक्त की जाती है, जिन पादपों से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की औषधियों का निर्माण होता है उन पौधों की उपलब्धता व अनुउपलब्धता पर खुलकर चर्चा हुआ करती है, हमारे कुछ साथी वैकल्पिक पौधों से औषधि निर्माण की वकालत भी करते हैं, कुल मिलाकर जितना भी प्राचीनता का विरोध किया जा सकता है उससे कहीं ज़्यादा विरोध किया जाता है

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मज़बूती देंगे नये कोर्स

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के 43 वें स्थापना दिवस के अवसर पर बोर्ड ने जिन दो नये कोर्सों के संचालन की घोषणा की है वह अपने आप में एक महत्वपूर्ण घटना है।

पिछले कई वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमितीकरण व मान्यता के बारे में सरकारों द्वारा गम्भीरता से विचार किया जा रहा है इसी क्रम में भारत सरकार के स्वास्थ्य मन्त्रालय द्वारा 28 फरवरी, 2017 को एक नोटिस जारी कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की दिशा में एक कदम आगे बढ़ा दिया है।

इस नोटिस के माध्यम से सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्रियाकलापों के बारे में जानकारी चाही है, अन्य बातें तो गौण हैं सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सरकार ने इस बार यह जानकारी चाही है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में जो कोर्स संचालित किये जा रहे हैं उनका स्तर क्या है और उनमें क्या क्या विषय समाहित हैं ?सरकार यह भी जानना चाहती है कि पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में संचालित हो रहे कोर्सों का स्तर क्या है ?क्या इनमें एकरूपता है या अपने अपने ढंग से संचालित किये जा रहे हैं ?पिछले कई बार की कमेटियों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षण व्यवस्था पर सवाल उठाये गये थे और ख़ासतौर से उत्तर प्रदेश में चिकित्सा विभाग द्वारा स्पष्ट कह दिया गया है कि स्नातक और परास्नातक स्तर के कोर्स उत्तीर्ण करने के बाद ही वह पंजीयन के अधिकारी होते हुए चिकित्सा कार्य कर सकते हैं। 28 फरवरी, 2017 के नोटिस में पैरा 4 (सी) में सरकार ने कहा है कि कमेटी एक स्तरीय कोर्स की रचना कर पाठ्यक्रम निर्धारित करेगी। सरकार ने इशारों ही इशारों में यह कह दिया है कि वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की संस्थाओं द्वारा जो कोर्स संचालित किये जा रहे हैं वह मान्यता के अनुरूप ही नहीं अपितु 25–11–2003 के आदेश के विरुद्ध भी हैं, उनमें संशोधन की आवश्यकता है, इसे हम समय की गति कहेंगे कि बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 को अगस्त 2016 में इस बात का आभास हो गया था जब आयुष अनुभाग – 1 द्वारा एक संशोधन पत्र जारी किया गया था तभी से बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 इस तरफ युद्ध स्तर पर कार्य करने लगा था, 8 महीने की लम्बी मेहनत के बाद और कई कमेटियों के गठन व उनसे प्राप्त निर्देशों के अनुरूप बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने इस क्षेत्र में कार्य किया और दो नये कोर्सों की संरचना की।

इन कोर्सों का नाम क्रमशः जी0 ई0 एच0 एस0 (ग्रेजुएट इन इलेक्ट्रो होम्योपैथी सिस्टम) अवधि 4+1 वर्ष व पी0 जी0 ई0 एच0 (पोस्ट ग्रेजुएट इन इलेक्ट्रो होम्योपैथी) अवधि 2 वर्ष है इन कोर्सों में प्रवेश के लिए न्युनतम शैक्षिक योग्यता इन्टरमीडिएट बायोलॉजी व पी0 जी0 ई0 एच0 कोर्स के लिए किसी भी चिकित्सा विधा में स्नातक या एम0 डी0 ई0 एच0 है।

इन कोर्सों को अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों में संचालित हो रहे कोर्सों के समकक्ष लाने का प्रयास किया गया है कुछ नये विषय भी जोड़े गये हैं दूसरे शब्दों में कहा जाये तो यह कोर्स प्रदेश के चिकित्सा विभाग द्वारा अनुसंशित पाठ्यक्रम के अनुरूप है तथा समय की मांग भी है। इस कोर्स का सबसे महत्वपूर्ण अंग यह है कि बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा यह स्पष्ट किया जा चुका है कि 4 वर्ष की नियमित शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त शिक्षार्थी को एक वर्ष का व्यवहारिक ज्ञान किसी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र या सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में पूरा करवाया जायेगा औषधियों के ज्ञान हेतु इलेक्ट्रो होम्योपैथी डिस्पेन्सरियों के माध्यम से व्यवहारिक ज्ञान प्रदान किया जायेगा।

इस तरह से इस योग्यता का धारक चिकित्सक अपने आप को किसी भी चिकित्सक से कम नही आंकेगा इस कोर्स को संचालित करने के पीछे जो लक्ष्य है वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित है अब हम यह नहीं चाहते हैं कि सरकार मान्यता की लम्बाई यह कहकर बढ़ा दे कि वर्तमान में जो कोर्स संचालित हो रहे हैं वह मान्यता के अनुरूप नहीं है।

43 वें स्थापना दिवस कार्यक्रम में बोर्ड के चेयरमैन के साथ ओ0 एस0 डी0 डा0 शाहीना इदरीसी

पूरे प्रदेश में धूमधाम से मनाया गया सीपना दिवस

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के 43 वें स्थापना दिवस कार्यक्रम के अनेक समाचार प्रदेश के कोने–कोने से प्राप्त हुये हैं, उनमें से कुछ फोटो प्रकाशित कर रहे हैं। सम्पदक

ऊपर बायें से बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी, ओ0एस0डी0 डा0 शहीना इदरीसी के बीच में रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमदइलेक्ट्रो होम्योपैथिक इन्सटीट्यूट जालौन द्वारा आयोजित बिन्दकी(फतेहपुर) में आयोजित कार्यक्रम।

स्थापना दिवस कार्यक्र कैमरे की नज़र से

G.E.H.S. पाठ्यक्रम का लोकार्पण करते डा0 पी0 एस0 बाजपेई, डा0एम0एच0 इदरीसी एवं शाहीना इदरीसी

डा0 पी0 एस0 बाजपेई का अभिवादन करते हुये
डा0 अतीक अहमद रजिस्ट्रार बी0ई0एच0एम0यू0पी0

एक मात्र पुस्तक
Iris Diagnosis
136 Page
&
Price ₹40 only
डाक खर्च ₹ 20 अतिरिक्त
आपके लिये अब
ऑनलाइन बुकिंग
की भी सुविधा
अपना नाम, पूरा पता
डाक का पिनकोड
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक गाइडें
मटेरिया मेडिका ₹ 25
जनस्वास्थ्य विज्ञान ₹ 50
प्रैक्टिस ऑफ़ मेडिसिन ₹ 30
फार्मेसी ₹ 5 फ़िलॉसोफ़ी ₹ 30
पर S.M.S. कर सकते हैं
Conditions applied
सम्पर्क करें
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक केन्द्र
बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0
127/204 एस जूही, कानपुर–208014
+91 9415074806, 9450153215, 9450791546, 9415486103